B.A Part I

Paper IInd

13.8.20

मुद्रा की सैद्धान्तिक एवं अनुभवसिद्ध परिभाषएं :-

(Theoritical & empirical defininitions of money)

मुद्रा की परिभाषा के बारे मे अर्थशास्त्री एकमत नही है, इसलिए प्रो० जॉनसन इस संबंध में चार मुख्य विचारधाराओं का उल्लेख करता है जिनकी पेसक और सेविंग के विचार के साथ नीचे विवेचना की गई है।

(1) परंपरागत परिभाषा (Traditional Definition of Money) — परंपरागत विचारधारा, जिसे करेंसी संप्रदाय भी कहते हैं, जिसके अनुसार, मुद्रा को करेंसी और मांग जमा कहा गया है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य विनिमय के माध्यम के रूप मे है। केन्ज़ ने परंपरागत विचारधारा का पालन करते हुए अपनी पुस्तक General Theory में नकदी और बैंकों की मांग जमा को मुद्रा परिभाषित किया। हिक्स ने अपने Critical Essays in Monetary Theory में मुद्रा की प्रकृति के परंपरागत तिहरे वर्गीकरण को बताया है; "लेखा की इकाई, भुगतान करने का साधन और मूल्य के संचय के रूप में।" बैंकिंग संप्रदाय ने मुद्रा की परंपरागत परिभाषा को मनमानी कहकर इसकी आलोचना की। इसमें मुद्रा का अर्थ बहुत संकुचित है क्योंकि अन्य परिसंपत्तियां भी है जो समानरूप से विनिमय का माध्यम स्वीकार की जाती हैं। इनमें कमर्शियल बैंकों के समय जमा-पत्र, विनिमय बिल, आदि शामिल हैं। इन परिसंपत्तियों की उपेक्षा करके परंपरागत विचारधारा उनके प्रभाव से इनके वेग (velocity) का विश्लेषण करने में समर्थ नही है। फिर, इनको मुद्रा की परिभाषा से निकालकर, केन्ज़वादी मुद्रा के ब्याज-लोच मांग फलन पर अधिक बल देते हैं, अनुभवसिद्ध तौर से उन्होंने ब्याज कर दर द्वारा उत्पादन और मुद्रा के स्टॉक के बीच संबंध स्थापित किया।

(2) फ्रीडमैन की परिभाषा (Friedman's Definition of Money) — मुद्रा से फ्रीडमैन का अभिप्राय है; "अक्षरशः वे सभी डालर जो लोग अपने जेबों मे लिए घूमते हैं, और वे सभी डॉलर जो मांग जमा और वाणिज्यिक बैंक

Scanned by CamScanner

के पास समय जमा के रूप में उनके बैंक खातों में हैं।" अतः उसकी परिभाषा के अनुसार, मुद्रा "करेंसी और कमर्शियल बैंकों की कुल समायोजित जमाओं का जोड़ है।" (the sum of currency plus all adjusted deposits in commercial banks). यह मुद्रा की व्यावहारिक परिभाषा है, जिसका फ्रीडमैन और श्वार्टज चुने हुए 1929, 1935, 1950, 1955 और 1960 वर्षों के लिए अमरीका की मौद्रिक प्रवृत्तियों के अनुभवसिद्ध अध्ययन के लिए प्रयोग करते हैं। यह मुद्रा की संकुचित परिभाषा थी और कमर्शियल बैंकों के दोनों मांग और समय - जमाओं में समायोजन (adjustment) तथा समाज और कमर्शियल बैंकों की बढ़ रही वित्तीय कृत्रिमता को ध्यान में रख कर रची गई थी। परन्तु फ्रीडमैन इस कृत्रिमता का एक सूचक भी स्थापित नहीं कर सका। इस समायोजन के साथ भी, नकद और जमा मुद्राओं की दीर्घकाल तक पूरी तरह से तुलना (comparison) नहीं की जा सकी थी। फिर भी 1950, 1955 और 1960 के लिए सहसंबंध प्रमाण (correlation evidence) ने मुद्रा की इस विस्तृत परिभाषा का सुझाव दिया : "कोई परिसंपत्ति जो क्रय शक्ति के अस्थाई निवास के रूप में क्षमता रखती हो।" (Any asset capable of serving as a temporary abode of purchasing power).

इस प्रकार फ्रीडमैन मुद्रा की दो प्रकार की परिभाषाएँ देता है। एक सैद्धांतिक आधार पर और दूसरी अनुभवसिद्ध आधार पर। इससे बहुत वाद-विवाद उत्पन्न हुआ जिसे फ्रीडमैन ने कार्यपद्धति-विषयक (methodological) विवादों के आधार पर सुलझाने का प्रयत्न किया। फ्रीडमैन के अनुसार, "मुद्रा की परिभाषा की खोज नियम के आधार पर नहीं करनी चाहिए बल्कि आर्थिक संबंधों के हमारे ज्ञान को सुव्यवस्थित करने में लाभदायकता के आधार पर।" अतः अनुभवसिद्ध उद्देश्यों के लिए प्रयोग की गई परिभाषा अमहत्त्वपूर्ण है क्योंकि भिन्न परिभाषाएं भिन्न परिणाम देंगी। अनुभवसिद्ध परिणाम अन्ततः परिसंपत्तियों की प्रकृति पर निर्भर करेंगे जो मुद्रा की क्रयशक्ति के अस्थाई निवास के रूप में परिभाषा में सम्मिलित हैं। इस प्रकार फ्रीडमैन मुद्रा की अपनी परिभाषा में दृढ़ (rigid) नहीं है और विस्तृत दृष्टिकोण रखता है जिसमें बैंक जमा, गैर-बैंक जमा और कई अन्य प्रकार की परिसंपत्तियां शामिल होती हैं, जिनके द्वारा मौद्रिक अधिकारी रोजगार, कीमतों और आय के भावी-स्तर या किसी अन्य महत्त्वपूर्ण समष्टि चर को प्रभावित करता है।

Scanned by CamScanner

(3) रेडक्लिफ की परिभाषा (Radcliff Definition) - रेडक्लिफ समिति ने मुद्रा को "नोट योग बैंक जमा" (note plus bank deposits) के रूप में परिभाषित किया। इसमें केवल वे परिसंपत्तियाँ शामिल हैं, जो सामान्यतौर से विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती हैं। परिसंपत्तियों से अभिप्राय तरल परिसंपत्तियों से है जिनका अर्थ है वस्तुओं और सेवाओं के लिए कुल प्रभावी मांग को प्रभावित कर रही मौद्रिक मात्रा। इसमें व्यापक रूप से साख (Credit) को शामिल समझा जाता है। इस प्रकार, समस्त तरलता स्थिति व्यय करने के निर्णय से संबंद्ध होती है। व्यय करना बैंक में नकदी या मुद्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि मुद्रा की वह मात्रा है जिसे लोग एक परिसंपत्ति बेचकर या उधार लेकर या जैसे बिक्री से प्राप्त आय समझकर धारण कर सकते हैं। समिति ने मुद्रा के प्रचलन वेग (velocity of circulation) की धारणा का प्रयोग नहीं किया क्योंकि संख्यात्मक स्थिरांक के रूप में इसमें कोई भी व्यावहारिक मात्रा नहीं पाई जाती है।

अधोशित अनुभवसिद्ध प्रयोगों के आधार पर कमेटी ने ब्याज दर द्वारा मुद्रा और आर्थिक क्रिया के बीच प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध नहीं पाया। परन्तु उसने सरलता के आधार पर इनमें नया संक्रमण तंत्र (transmission mechanism) प्रदान किया। उसने व्याख्या की कि ब्याज दरों में गति का अर्थ है वित्तीय संस्थानों द्वारा धारित बहुत-सी परिसंपत्तियों के पूंजी मूल्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन। ब्याज दरों में वृद्धि होने से कुछ उधारदाता कम उधार देते हैं क्योंकि पूंजी मूल्य गिर जाते हैं और अन्य इसलिए कि उनका ब्याज-दर ढ़ाचा दृढ़ (sticky) होता है। दूसरी ओर, ब्याज दर में गिरावट उनके तुलन-पत्रों में वृद्धि करती है और उधारदाताओं को नया व्यवसाय खोजने के लिए प्रोत्साहित करती है।

4. गुर्ले-शा परिभाषा (Gurley-Shaw Definition) - गुर्ले तथा शा वित्तीय मध्यस्थों द्वारा रखी गई काफी मात्रा में तरल परिसंपत्तियां और गैर-बैंक मध्यस्थों की देयताओं को मुद्रा के निकट स्थानापन्न समझते हैं। मध्यस्थ संचय के रूप में मुद्रा के लिए स्थानापन्न प्रावधान प्रदान करते हैं। यथार्थ मुद्रा जिसे करेंसी योग मांग जमा परिभाषित किया गया है; केवल एक तरल परिसंपत्ति है। इस प्रकार, उन्होंने तरलता पर आधारित मुद्रा की एक विस्तृत परिभाषा निर्मित की है जिसमें बांड, इंशोरेंस रिजर्व, पेंशन फंड, बचत और ऋण शेयर शामिल हैं। वे मुद्रा स्टॉक के वेग (velocity) में विश्वास रखते हैं जो गैर-बैंक मध्यस्थों द्वारा प्रभावित होता है। उनके मुद्रा की परिभाषा पर विचार अपने और गोल्डस्मिथ की अनुभवसिद्ध जांचों पर आधारित हैं।

Scanned by CamScanner

(5) पेसक-सेविंग परिभाषा (Pesek-Saving Definition)- पेसक और सेविंग के अनुसार, मुद्रा में बैंको के मांग जमा और सरकार द्वारा जारी मुद्रा शामिल होने चाहिए। वे बैंक मुद्रा में समय और बचत खाते शामिल नहीं करते हैं। वे कुल मुद्रा को, जिसमें मांग-जमा शामिल है, समाज की शुद्ध संपत्ति मानते हैं। वे मुद्रा की ऋण के साथ तुलना करते हैं। मुद्रा ब्याज नहीं देती लेकिन ऋण ब्याज देता है। ऋण स्वयं संपत्ति नहीं है, क्योंकि जो बैंक मुद्रा को धारण करते हैं, जबकि बैंक उसे प्रभावी देयता मानते हैं।

Scanned by CamScanner